

भारतीय युवाओं में अशांति : कारण और उपचार

डॉ० खेमेन्द्र कुमार शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

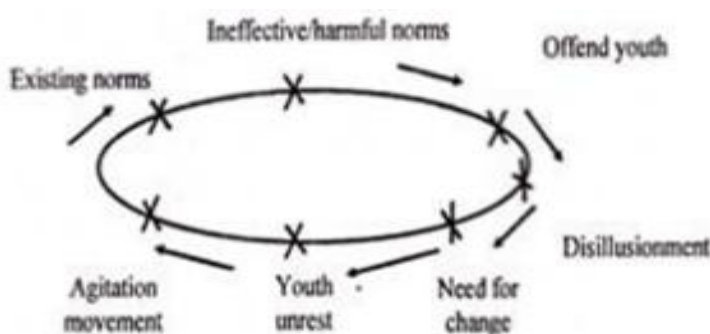
सारांश

आज का युवा वर्ग देश की प्रगति और विकास की रीढ़ है। भारत को दुनिया का सबसे युवा देश कहा जाता है, लेकिन वर्तमान समय में भारतीय युवाओं में बढ़ती अशांति, असंतोष और मानसिक तनाव एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। युवा ऊर्जा जब सही दिशा नहीं पाती, तो वह आक्रोश और भटकाव में बदल जाती है। इस समस्या को गहराई से समझने के लिए इसके मुख्य कारणों और प्रभावी उपचारों पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। यह तभी है जब छात्र सभी परीक्षा प्लेसमेंट नौकरी किसी भी तरह के कॉमन जैसे मुद्दों पर निराशा महसूस होती है क्या यह कहना सही है कि हमारे छात्र की अशांति समाज के लिए मौजूद है। यह वास्तव में एक मामला है जहां युवा बाहरी प्रभावों के प्रति संवेदनशील होते हैं और दूसरों की नकल करते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि युवा केवल विनाशकारी विश्वासघात और भूवैज्ञानिक गतिविधियों में शामिल होने का एक तरीका अपनाते हैं। कहीं सवाल उठता है क्यों क्या अकेले युवाओं से पारंपरिक के अनुरूप होने की उम्मीद की जानी चाहिए नैतिक मूल्य और बुलंद विचार वे स्व-घोषित राजनीतिक धार्मिक और कैसे देख सकते हैं प्रेरणा के लिए सामाजिक नेता आज भारतीय छात्र समाज के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी हैं जो इसकी वजह से हैं जीवन के विभिन्न बदलते मूल्यों सत्ता के लिए पागल दौड़ के बीच गतिविधियों की बहुलता वफादारी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों की कमी और स्वार्थी अवसरवाद के बीच स्थानांतरण नेताओं ने छात्र समुदाय को सीधे प्रभावित किया है। और यह एक कड़वा तथ्य है बल्कि एक वास्तविकता है। बस इतना है कि वे इन प्रवृत्तियों को हिंसक चरम सीमा तक ले जा रहे हैं। इसलिए यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि छात्रों में अशांति बाहर से आती है। वर्तमान छात्र को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराने के लिए प्रशासनिक दिनचर्या से जुड़ा होना चाहिए ताकि उसकी विकासशील अहंकार कम से कम कुछ हद तक संतुष्ट हो।

प्रस्तावना

युवा अशांति को समाज में युवाओं की सामूहिक हताशा की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। छात्र अशांति के लिए अकेले छात्र जिम्मेदार नहीं हैं क्या यह कहना सही है कि हमारे छात्र की अशांति समाज के लिए मौजूद है। सामाजिक अशांति की अवधारणा सामूहिक हताशा और आम सामाजिक मुद्दों पर मोहभंग है। प्रत्येक राष्ट्र अपने युवाओं को अपनी रीढ़ के रूप में मानता है क्योंकि सभी युवा और महिलाएं ही भविष्य की उम्मीदें होती हैं। लेकिन अब समाज के युवाओं में व्यापक प्रसार हताशा पाई गई है उनकी कार्य क्षमता में कमी। वे सामाजिकता के खिलाफ

व्यवहार करके अपना असंतोष दिखा रहे हैं। समस्या राष्ट्रीय होने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय भी है। वर्तमान समय में युवाओं की स्थिति का व्यापक और सही मूल्यांकन होना आवश्यक है वस्तुनिष्ठ तरीके से इनमें से प्रत्येक कारक की जांच करना आवश्यक है। भारत का छात्र संसार आज अशांति और बेचैनी की स्थिति में है। छात्र की अनुशासनहीनता के कारण गड़बड़ी और अव्यवस्था के उदाहरण खुद प्रकट हुए हैं देश के लगभग सभी हिस्सों में इस घटना ने इस तरह के उभरते आयामों को मान लिया है हमारे तत्काल ध्यान की आवश्यकता के लिए एक गंभीर रूप से गंभीर समस्या बन जाती है। छात्र जीवन में अध्ययन उनका एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए। लेकिन वे खुद को देश के राजनीतिक आंदोलन से पूरी तरह अलग नहीं रख सकते। इसके अलावा, विभिन्न राजनीतिक दल अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए छात्रों का उपयोग करते हैं। राजनीतिक नेता भी ईमानदार नहीं होते कई मामलों में ईमानदार होते हैं। वे छात्रों को महान गतिविधियों के लिए प्रेरित नहीं कर सकते। इन सभी कारणों से छात्रों में असंतोष की भावना पैदा होती है। तो वर्तमान अशांति उस असंतोष की अभिव्यक्ति है। परिणामस्वरूप वे अपनी शिकायतों को दूर करने के लिए आंदोलन शुरू करते हैं।



युवा अशांति के प्रमुख लक्षण :

प्रतिरोध आंदोलन—

प्रतिरोध आधारित आंदोलन का मुख्य उद्देश्य बिजली धारक को अंदर रखना है उनकी जगह उदाहरण के लिए, यदि कोई हो, तो मार्कशीट पर कम अंक दिखाने के लिए एक विश्वविद्यालय का निर्णय प्रत्याशियों के अंकन में कमी, छात्रों द्वारा आंदोलन के माध्यम से विरोध किया गया था। अंततः विश्वविद्यालय के शिक्षाविदों की परिषद को यह तय करने के लिए मजबूर किया कि अंकों को कम नहीं किया जाएगा। छात्र मसल्लस का प्रतिरोध कर सकते हैं। प्रतिरोध आंदोलन निराशा और व्यक्त करता है जिस दिशा में विश्वविद्यालय आगे बढ़ रहा है या अभिनय छात्रों की चिंता कर रहा है,

प्रेरक आंदोलन—

यहां के युवा चर्चा करने से होने वाली शक्तियों के गुण को बदलने का प्रयास करते हैं एक टेबल पर उनके साथ उनकी समस्याएं और उन्हें उनके दृष्टिकोण को स्वीकार करने की अनुमति देता है। ये आंदोलन उग्र हो गया अपेक्षाकृत गंभीर मुद्दों से लेकर महत्वपूर्ण जारी करने वाले वास्तविकता के लिए गंभीर क्रोध और अन्याय इस विधि के माध्यम से न केवल श्रद्धा पैदा करना और निष्क्रिय युवाओं के लोकप्रिय समर्थन को जुटाना या हानिरहित भावनात्मक दुकानों में असंतोष।

क्रांतिकारी आंदोलन—

क्रांतिकारी आंदोलन का मूल उद्देश्य अचानक व्यापक परिवर्तन लाना है शैक्षिक और सामाजिक व्यवस्था में। उदाहरण के लिए अधिकारियों को यह तय करने के लिए मजबूर करना कि कोई छात्र नहीं होगा के रूप में विफल घोषित किया गया, लेकिन उच्च वर्ग में पदोन्नत किया जाएगा और उन्हें प्रकट होने के अवसर प्रदान करेंगे असफल पेपर या विषय जब तक वह इसे साफ नहीं कर देती। सुधारवादी नेताओं को मूल परिवर्तन संभव के बाद ही दिखाई देते हैं मौजूदा सिस्टम को उखाड़ फेंका जाता है और एक बार में एक नया सिस्टम पेश किया जाता है। क्रांतिकारी के उदाहरण आंदोलन को चीन में 1987 में युवा आंदोलन, 1994 में असम में आसू आंदोलन द्वारा चित्रित किया जा सकता है। उत्तराखंड में 1994 में उत्तराखंड आंदोलन और 1989-96 के दौरान असम में बोदो आंदोलन।

आंदोलन के लिए युवा ग्रहणशील-आम तौर पर पांच तरह के युवा होते हैं जो आंदोलनकारी गतिविधियों में भाग लेते हैं पहचाना गया

1. सामाजिक रूप से अलग-थलग युवा जो खुद को अलग-थलग महसूस करते हैं और बड़ी समाज से कट जाते हैं।
2. परिवार के प्रति असंबद्ध जिन युवाओं को अपने परिवारों के साथ अंतरंग संबंधों की कमी होती है, उन्हें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है आंदोलन में गर्म और संतोषजनक पारिवारिक संबंधों वाले युवा व्यक्तियों को भावनात्मक रूप से जुड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।
3. व्यक्तिगत रूप से कुकृत्ययुवा जो संतोषजनक जीवन भूमिका पाने में असफल रहे हैं, उदाहरण के लिए उनजिन्होंने अध्ययन में पर्याप्त रुचि नहीं विकसित की है, वे बेरोजगार हैं या अल्पविहीन हैं या असफल होने के कारण वे अपने जीवन में शून्य को भरने की भावनात्मक आवश्यकता के कारण आंदोलन में शामिल होते हैं।
4. प्रवासियों उनके पास बड़े समुदाय में शामिल होने, आंदोलन में शामिल होने की बहुत कम संभावना है उनके लिए शरण का काम करता है।
5. मार्जिन युवा जो पूरी तरह से अपनी जाति, धार्मिक, भाषाई के साथ स्वीकार और एकीकृत नहीं है समूह असहज, असुरक्षित और नाराज महसूस करता है। उन्हें स्वयं में विसंगति को हल करना मुश्किल लगता है



युवा अशांति के कारण

1: संस्थान का दोषपूर्ण प्रशासन—

छात्र प्रशासनिक तंत्र और नौकरशाही के सबसे बुरे शिकार हैं इसके सिर के निरंकुश तरीके व उदासीनता और लापरवाही के माहौल में रहते हैं। उदासीनता क्रोध को जन्म देता है और यह लापरवाह व्यक्तियों की आदत बन जाती है,

जिनके कारण गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार किया जाता है उनका गुस्सा असंतोष आम तौर पर छात्रों के बीच बढ़ता चला जाता है और जब यह मान लेता है एक खतरनाक आयाम तब प्रशासन इसके बारे में चिंतित हो जाता है। इस प्रकार असंगत, किसी भी स्तर पर छात्र के असंगत और किसी न किसी तरह से निपटने, उसे कहीं गहरे बीज बोता है विद्रोह का यह एक तथ्य है कि यदि छात्रों के साथ व्यवहार में यह एक कारक को ध्यान में रखा जाता है, तो कई बीमारियों, जो छात्रों को हताशा की ओर ले जाता है और बाद में हिंसा पर उतारू हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने, समय और फिर से इस तथ्य पर जोर दिया कि छात्र को जीवित इकाई के रूप में माना जाना चाहिए जीवन और स्वचालन के रूप में नहीं। नई परिस्थितियां कच्चे युवाओं को ऐसा न करने के लिए तकनीकों की मांग करती है।

2: आंतरिक मूल्यांकन में पक्षपात—

आंतरिक मूल्यांकन अक्सर होता है, यदि हमेशा नहीं होता है, तो इसके परिणामस्वरूप उन लोगों के दिमाग में हलचल होती है इससे प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कोई संदेह नहीं, आवधिक मूल्यांकन के लिए आंतरिक मूल्यांकन की शुरुआत छात्र का काम अपने आप में अच्छा है, लेकिन यह देखकर बहुत दुख होता है कि यह एक उपकरण बन गया है, छात्रों के शोषण के लिए शिक्षकों की। परिणामस्वरूप जो अपने शिक्षकों का पक्ष जीत सकते हैं लगभग हमेशा सफल उम्मीदवारों की सूची शीर्ष पर है कि क्या वे इसके लायक हैं या नहीं। काफी हैरानी की बात है इस दिशा में तथ्यों का पता चला है और यह पाया गया है कि छात्रों को मुश्किल से पास अंक मिल रहे हैं शिक्षकों के पास होना चाहिए अपने छात्रों के प्रति निष्पक्ष रवैया और मूल्यांकन के मामलों में कोई पूर्वाग्रह नहीं दिखाना चाहिए पाठ्यक्रम का श्रेय उन छात्रों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने विभिन्न पाठ्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य किया है और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ लेकिन किसी भी तरह से, उन्हें इसे अपने व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने के लिए एक कोई व्यक्तिगत संपर्क नहीं है उनके शिक्षक जिनकी उपयोगिता है, वे हाशिए पर हैं। अस्सी के बीच अक्सर उपकरण के रूप में उपयोग करना चाहिए।

3 : शिक्षक और छात्र के बीच तनावपूर्ण संबंध—

हर कोई इस तथ्य से अवगत है कि आज एक छात्र और शिक्षक के बीच एक चौंका देने वाला प्रतिशत होता है और उन में से नब्बे, जिन्होंने अपने प्रवास के दौरान, अपने शिक्षकों से बात नहीं की है। बहुत बार छात्रों को शिक्षकों के नाम भी नहीं पता होते हैं क्योंकि एक शिक्षक होता है उनके बीच, किसी अन्य नाम से जाना जाता है, जो उनके उद्देश्य के साथ-साथ उनकी सेवा करता है। और यह शिक्षक, निश्चित रूप से, या तो उज्ज्वल या कुछ को छोड़कर अपने छात्रों को नाम से नहीं जान सकता है। इस प्रकार स्नेह और श्रद्धा का बंधन जो एक बार दोनों को एक साथ बांध देता है, हमारे वर्तमान शिक्षण संस्थान और यह आश्चर्यजनक नहीं है, यदि परिस्थितियों में छात्र, थोड़ी सी भी उत्तेजना में, अंधाधुंध गतिविधियों के लिए ले लो। शिक्षकों को अपने अकादमिक आइवरी टावरों से बाहर आना चाहिए जो छात्र उनके प्रति सच्चा स्नेह और सच्चा सम्मान रखेंगे। इस प्रकार उनके लिए आसान पहुँच शिक्षक उन्हें संतुष्टि बिंदुओं तक पहुँचने से पहले उनकी दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सक्षम करेंगे। शिक्षण अब एक ही रास्ता नहीं होना चाहिए बल्कि दोनों का एक संयुक्त उद्यम होना चाहिए।

4 : युवाबेरोजगारी—

युवा बेरोजगारी युवा लोगों की स्थिति है जो नौकरी की तलाश में हैं, लेकिन नौकरी नहीं पा सकते हैं, जिसकी आयु सीमासंयुक्त राष्ट्रद्वारा 15–24 वर्ष के रूप में परिभाषित की गई है। एक बेरोजगार व्यक्ति को किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके पास नौकरी नहीं है लेकिन वह सक्रिय रूप से काम मांग रहा है। आधिकारिक और सांख्यिकीय माप के लिए बेरोजगार के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति बेरोजगार के बिना, इच्छुक और

काम करने में सक्षम होना चाहिए, आधिकारिक तौर पर नामित काम करने की उम्र (अक्सर किशोर से 60 के दशक के मध्य तक) और सक्रिय रूप से एक स्थिति की खोज करना। दुनिया के हर देश में युवा बेरोजगारी दर वयस्क दर से अधिक है। युवा बेरोजगारी के पीछे कई और जटिल कारण हैं। उनमें से, शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता, अनम्य श्रम बाजार और नियम, जो आज सहायता और निर्भरता की स्थिति पैदा करते हैं, आज मुख्य चर्चा के कारण हैं।

5 : युवाओं का भविष्य में अविश्वास—

हमारे देश के युवाओं के पास जीवन में एक लक्ष्य होने की कमी है और जब तक नहीं शिक्षा युवाओं को मिशन की भावना से संपन्न करती है यह एक पूरी तरह से असफलता है। निंदक की भावना है छात्र दुनिया में बह गए और हमारे युवा पुरुषों और महिलाओं को भविष्य में कोई विश्वास नहीं है। वे सभी है आगे मार्च करना लेकिन कोई नहीं जानता। वे वास्तव में, अंधेरे में टटोल रहे हैं। वे एक पतवार की तरह हैं ऐसा कुछ भी नहीं है उनकी दृष्टि में श्रद्धा के योग्य है। वे देश की परंपराओं से अनभिज्ञ हैं क्योंकि माहौल जो सीखने की सीटों पर प्रबल होता है, वह उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत से अलग कर देता है एक जवान आदमी के बारे में हमेशा सोचा जाता है ऊर्जावान और आक्रामक और अगर मुश्किल काम करने के लिए तैयार हो तो बुलाया जाए। लेकिन सूली पर खड़ा है—जीवन की सड़कें, भारतीय छात्र को उसके अतीत से मृत अतीत और अजन्मे भविष्य के बीच के रूप में फाड़ दिया जाता है आने वाली चीजों के भविष्य के आकार के बारे में दृष्टि स्पष्ट नहीं है, वह बेचैन है और खोज करने के लिए उत्सुक है।

6 : गैर-सामाजिक वातावरण—

छात्र अशांति को हमारे समाज में व्याप्त सामान्य दृष्टिकोण से अलग-थलग नहीं किया जा सकता है आज, जहां पूर्व धारणा के बीच एक खाई हमेशा के लिए एक महान असंतोष का कारण बनी है बढ़ते युवाओं के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति मृत अंत की ओर अग्रसर है। मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण आदि की समस्याएं युवाओं को सीधे प्रभावित करती हैं समाज के अन्य वर्गों को प्रभावित करते हैं। जो छात्र कक्षा-कक्ष में अक्सर नहीं बैठा होता है अपनी पढ़ाई में उसका मन है लेकिन अपनी घरेलू समस्याओं के बारे में सोच रहा है। जब वह अपनी अपेक्षाओं और उसके बाद आने वाली चीजों को नहीं पाता है कुछ भी चौंकाने वाला नहीं अगर इस स्तर पर वह हिंसक हो जाए। इसके अलावा, यह एक परंपरा बन गई है कि एक व्यक्ति के आंदोलन करने के बाद ही अधिकारी सुनते हैं और अब जब छात्रों ने कुछ नहीं किया है। आखिरकार वे समाज के प्रबुद्ध वर्ग का निर्माण करते हैं और यदि वे विद्रोह करते हैं तो वे उचित हैं अपने तरीके से हालांकि, समस्या को हल किया जा सकता है, जब हम वर्तमान समाज को इसके प्रचलित विचारों से मुक्त करते हैं और इस तरह के आकर्षक माहौल का निर्माण करें क्योंकि युवा इसके अभिन्न अंग होने पर गर्व महसूस कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में हम, निश्चित रूप से, माता-पिता और शिक्षकों के स्थान को कम से कम नहीं कर सकते हैं।

7 : राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में बदलाव —

देश में स्वतंत्रता की शुरुआत के साथ, देशभक्त नेताओं के जीवन के लिए प्रेरणादायक दृष्टित्याग और निस्वार्थता धीरे-धीरे गायब हो गई। व्यक्तिगत शक्ति के पंथ ने विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार को जन्म दिया। जो लोग किसी योग्य नहीं थे स्थिति या कार्यालय सार्वजनिक जीवन और विस्मित विशाल भाग्य बन गए। बिना साधन के पुरुष और आदर्शों के बिना अचानक भाग्य और शक्ति की स्थिति में वृद्धि हुई। सार्वजनिक जीवन में ऐसी प्रवृत्ति का सामान्य प्रभाव विनाशकारी नहीं हो सकता है। सत्ता में आए लोग अर्जित भाग्य ने ईर्ष्या को जन्म दिया, इस परिणाम के साथ कि राजनीतिक दलों में प्रतिद्वंद्विता थी और नेताओं के बीच आपसी सामंजस्य। मेरिट और अखंडता हताहत हो गई। की ऐसी अवस्थामामलों ने

स्वाभाविक रूप से रोजमर्रा की जिंदगी में मूल्यों की झूठी भावना को जन्म दिया। देश के सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में इस तरह के बदलावों का युवा के दिमाग पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है जो छात्र स्वभाव से प्रभावशाली होते हैं। वे सोचने लगे कि उनका आदर्शवाद और ईमानदारी हैकेवल दुख और कोई धन या खुशी नहीं लाई। उन्हें निराशा होने लगी। आज रुचियांव्यक्तिगत उन्नति युवाओं के जीवन और सोच पर हावी है। सार्वजनिक जीवन में ये प्रवृत्तियाँ हमारी अखंडता के मानकों को बिगाड़ दिया है। अधिकांश युवा आत्मनिर्भर हो गए हैं वे दूसरों की आलोचना कर रहे हैं, लेकिन खुद के लिए महत्वपूर्ण है।

युवा अशांति के उपाय

1 : रोजगार के अवसर –

छात्रों के हितों के अनुसार अवसर प्रदान करने और कृषि, इंजीनियरिंग, व्यवसाय प्रबंधन, वाणिज्य, चिकित्सा, आदि में पाठ्यक्रमों की पेशकश करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। आत्मनिर्भरता की भावना पैदा की जानी चाहिए और छात्रों को सेट करने के लिए अपने खुद के व्यवसाय और कुटीर उद्योग हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2 : आर्थिक कठिनाइयाँ –

जब आप सीखते हैं तब कमाएँ का कार्यक्रम अच्छी तरह से व्यवस्थित होना चाहिए। गरीब और जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, मुफ्त जहाज, ऋण छात्रवृत्ति, मुफ्त छात्रावास की सुविधा, वजीफे आदि के माध्यम से वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए ताकि वे स्कूलों और कॉलेजों से बाहर न निकलें।

3 : छात्रों और शिक्षकों के मध्य उचित संचार –

छात्रों और शिक्षकों के बीच संचार की खाई को पाटना चाहिए। शिक्षक को छात्रों को संदेह की नजर से नहीं देखना चाहिए। उनमें आत्मविश्वास होना चाहिए। उसे अपने दोस्त, मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में कार्य करना चाहिए। इस प्रकार स्नेह और श्रद्धा का बंधन जो एक बार दोनों को एक साथ बांध देता है, से गायब है, हमारे वर्तमान शिक्षण संस्थान और यह आश्चर्यजनक नहीं है, यदि परिस्थितियों में छात्र, शिक्षक, निश्चित रूप से, या तो उज्ज्वल या कुछ को छोड़कर अपने छात्रों को नाम से नहीं जाना जाता है, थोड़ी सी भी उत्तेजना में, अंधाधुंध गतिविधियों के लिए ले लो। यह सब करने के लिए, हमें छात्रों और शिक्षकों के बीच स्वस्थ संबंधों को देखना होगा। शिक्षकों को अपने अकादमिक आइवरी टावरों से बाहर आना चाहिए, जो छात्र उनके प्रति सच्चा स्नेह और सच्चा सम्मान रखेंगे। इस प्रकार उनके लिए आसान पहुँच शिक्षक उन्हें संतुष्टि बिंदुओं तक पहुँचने से पहले उनकी दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सक्षम करेंगे। शिक्षण अब एक ही रास्ता नहीं होना चाहिए, बल्कि दोनों का एक संयुक्त उद्यम होना चाहिए। यह नहीं होगा केवल शिक्षक-शिक्षण को प्रभावी बनाने में मदद करेगा, बल्कि तनाव को कम करने के लिए और आगे बढ़ेगा।

4 : युवा नेतृत्व के संबंध में कार्यक्रम –

पर्यवेक्षण के तहत नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम कॉलेजों में पेश किए जाने चाहिए। बच्चों को बहुत ही सक्षम और कुशल नेतृत्व की आवश्यकता होती है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में नेतृत्व बहुत महत्वपूर्ण है नेतृत्व युवा अशांति की तीव्रता और दिशा को प्रभावित करता है। वह भावनात्मक तालमेल की एक इमारत विकसित करता है सदस्यों को उनकी समस्या और शिकायत की याद दिलाते हुए। वे उन्हें सक्रिय रूप से निर्देशित करने के लिए प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष

कोई निराशा नहीं है उत्साहपूर्वक हमारे समाज के निर्माण की प्रक्रिया में शामिल है। एक्स्टेंट का प्रश्न और शैक्षिक प्रशासन की प्रक्रिया में छात्रों की भागीदारी के पैटर्न पर फैसला जल्द से जल्द करना होगा। देश में लेकिन घटनाओं

का गहराई से विश्लेषण करने पर पता चलता है कि यह समस्या सबसे सरल नहीं है लोगों की सोच भारतीय छात्रों के अवमूल्यन की स्थिति के बारे में स्पष्ट रूप से पता लगाया जा सकता है कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पर्याप्त और उचित सुविधाओं का अभाव, अपर्याप्त और दुर्गम प्रोफेसर्स, अयोग्य और कठोर-गर्दन वाले या नौकरशाही प्रशासक, सह-पाछाओं को राजनीति से दूर रखने के लिए प्रेरित करने और फिर भी उन्हें पाने की उम्मीद में उद्योग के लिए सुविधाओं की कमी गतिविधियों और तेजी से सीमित होने के बाद भी नौकरियों के लिए संभावनाएं सीमित हैं संभव डिग्री यह विश्वविद्यालय के तेजी से और बड़े पैमाने पर अनियंत्रित विस्तार का परिणाम है आजादी के बाद से शिक्षा हर साल विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और छात्रों की संख्या बढ़ती है, लेकिन यह नौकरियों के अवसरों के साथ या सुविधाओं के साथ भी कम नहीं है छात्रों का मानसिक और शारीरिक विकास ऐसे छात्र हैं जिन्होंने कभी भी उनसे बात नहीं की है कोई आश्चर्य नहीं कि प्राध्यापक ऐसे भी हैं जो अपने कई छात्रों को जानते हुए भी नहीं जानते हैं एक साथ वर्षों के लिए उन्हें सिखाया जा रहा है। इसके अलावा, भारत में अधिकांश छात्र गरीबी से आते हैं वे परिवार जो वास्तव में अपने बच्चों की शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते, लेकिन जो उन्हें अंदर भेजते हैं अपने भविष्य के करियर के निर्माण के साथ-साथ परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार की उम्मीद है जब वे अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उपयुक्त रूप से नियोजित होते हैं। लेकिन शैक्षणिक मानकों के साथगिरावट और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है विश्वविद्यालय की डिग्री एक बेहतर पासपोर्ट के रूप में अपना मूल्य खो रही है। वास्तव में, पूरी बनावट हमारे समाज को उन विषम तत्वों के साथ मिश्रित किया जाता है जो हमेशा अपनी कुल्हाड़ी रखने के बारे में सोचते हैं पीस। हमारे पास अनुशासन के बिना घर और स्कूल हैं, माता-पिता और शिक्षक बिना अधिकार के, न्याय के बिना स्मारक और परीक्षा के बिना शिक्षा। विनम्रता, ईमानदारी के बिना पुरुष, ईमानदारी के बिना राजनीति और सम्मान के बिना राजनीतिज्ञ। यह सब युवाओं के व्यक्तित्व को दर्शाता है जो ठंड या सोबर की तुलना में आवेग के तहत अधिक काम करते हैं छात्रों और शिक्षकों के बीच संचार की खाई को पाटना चाहिए। शिक्षक को छात्रों को संदेह की नजर से नहीं देखना चाहिए। उनमें आत्मविश्वास होना चाहिए। उसे अपने दोस्त, मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में कार्य करना चाहिए। इस प्रकार स्नेह और श्रद्धा का बंधन जो एक बार दोनों को एक साथ बांध देता है, से गायब है, हमारे वर्तमान शिक्षण संस्थान और यह आश्चर्यजनक नहीं है, यदि परिस्थितियों में छात्र, शिक्षक, निश्चित रूप से, या तो उज्ज्वल या कुछ को छोड़कर अपने छात्रों को नाम से नहीं जाना जाता है, यह सब करने के लिए, हमें छात्रों और शिक्षकों के बीच स्वस्थ संबंधों को देखना होगा। मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण आदि की समस्याएं युवाओं को सीधे प्रभावित करती हैं समाज के अन्य वर्गों को प्रभावित करते हैं। छात्र, जो कक्षा-कक्ष में अक्सर नहीं बैठा होता है अपनी पढ़ाई में उसका मन है लेकिन अपनी घरेलू समस्याओं के बारे में सोच रहा है। वह, युवा और भरा हुआ स्पष्ट रूप से उत्तेजित महसूस करता है जब वह अपनी अपेक्षाओं और उसके बाद आने वाली चीजों को नहीं पाता है कुछ भी चौंकाने वाला नहीं अगर इस स्तर पर वह हिंसक हो जाए। इसके अलावा, यह एक परंपरा बन गई है कि एक व्यक्ति के आंदोलन करने के बाद ही अधिकारी सुनते हैं और अब छात्रों ने चौंका देने वाला कुछ नहीं किया है छात्र प्रशासनिक तंत्र और नौकरशाही के सबसे बुरे शिकार हैं इसके सिर के निरंकुश तरीके वे उदासीनता और लापरवाही के माहौल में रहते हैं। उदासीनता क्रोध को जन्म देता है और यह लापरवाह व्यक्तियों की आदत बन जाती है, जिनके कारण गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार किया जाता है उनका गुस्सा, असंतोष आम तौर पर छात्रों के बीच बढ़ता चला जाता है और जब यह मान लेता है एक खतरनाक आयाम तब प्रशासन इसके बारे में चिंतित हो जाता है।

संदर्भग्रन्थ सूची

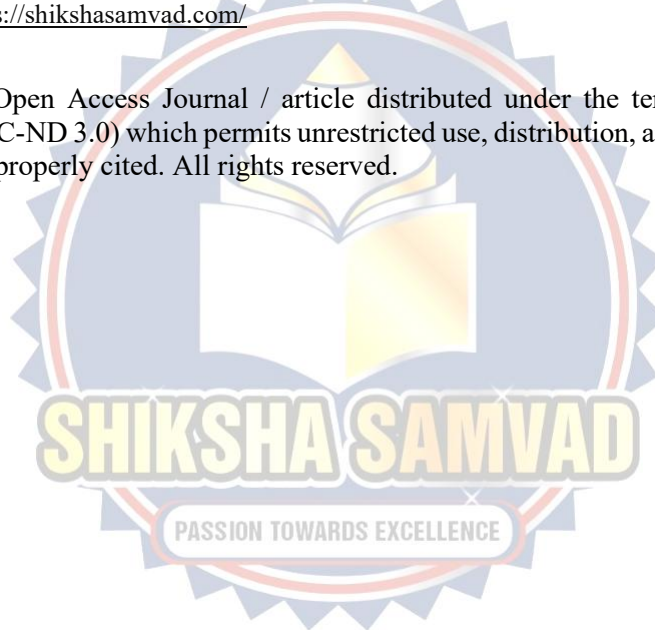
- 1 –ऑल्टबैक फिलिप जी, छात्र क्रांतिरू एक वैश्विक विश्लेषण, बॉम्बे,11,13
- 2 –चौधरी डॉ कविता, STUDENT UNREST- CAUSES AND CURE ,4,6,8
- 3 – गांधी, एमके, टू स्टूडेंट्स, अहमदाबाद, नवजीवन,
- 4– <https://www-lawordo-com/>
- 5– <https://www-wikipedia>
- 6 – देव ,आधुनिक शर्माकपिल भारतीय युवारू कारण और परिणामअशांति और कोर आंदोलनइंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड साइंसेज एंड इंजीनियरिंग (IJASE) 2 (1)रू अप्रैल 2014, 21–26 ,2014 नई दिल्ली प्रकाशक।
- 7–यूजीसी समिति की रिपोर्ट श्र भारत में छात्र अनुशासनहीनता की समस्या, 1960 यूजीसी दिल्ली शाह, बीवी 1968 सोशियोलॉजिकल बुलिटियन, बॉम्बे मार्च

Cite this Article:

शर्मा, डॉ. खेमेन्द्र कुमार. (2026). भारतीय युवाओं में अशांति: कारण और उपचार. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, Pp.394-401, March-2026. Journal, URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० खेमेन्द्र कुमार शर्मा

For publication of research paper title

भारतीय युवाओं में अशांति : कारण और उपचार

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed
Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03,
Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.67

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and
the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>
DOI:- <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.43>